THRU the BIBLE



जुड़वां

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 25
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 25

प्रिय परमेश्वर,

हम इस समय के लिए धन्यवाद के साथ आपके सामने आते हैं। जब हम आपके वचन पर मनन करें, तो हमारे हृदय और मन खोल दीजिए। हमें अपना सत्य सिखाइए, हमारी समझ का मार्गदर्शन कीजिए, और हमें बुद्धि में बढ़ने तथा आपके मार्गों पर भरोसा करना सिखाइए।

आमीन।

शरीर और आत्मा के बीच संघर्ष

उत्पत्ति 25

इसहाक और रिबका ने **साथ में अपना जीवन शुरू किया** और वे खुश थे। लेकिन सारा की तरह, रिबका भी माँ नहीं बन पा रही थी। **इसहाक ने 20 साल तक उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना की** और आखिरकार परमेश्वर ने कहा, "अब समय आ गया है।" **तब वह जुड़वाँ बच्चों से गर्भवती हुई।** उसकी **गर्भावस्था** आसान नहीं थी। **दोनों बच्चे गर्भ में आपस में संघर्ष कर रहे थे** और रिबका ने इस बारे में परमेश्वर से पूछा। वह जान गई थी कि **कुछ महत्वपूर्ण हो रहा है।**

इन दो लड़कों का संघर्ष, जो उनके जन्म से पहले ही शुरू हो गया था, उस संघर्ष को दिखाता है जो आज भी दुनिया में चल रहा है। यह ज्योति और अंधकार के बीच, भलाई और बुराई के बीच, आत्मा और शरीर की अभिलाषाओं के बीच का संघर्ष है। परमेश्वर की हर संतान इस संघर्ष से परिचित है। (इसके बारे में रोमियों 7 में पढ़ें)।



> इन दो लड़कों का संघर्ष, जो उनके जन्म से पहले ही शुरू हो गया था, उस संघर्ष को दर्शाता है जो आज भी दुनिया में जारी है।



अव्यवस्थित परिवार

इसहाक - पिता

एसाव - चहेता पुत्र

इसहाक एसाव से प्रेम करता था

- एसाव इसहाक का प्रिय पुत्र था, क्योंकि वह खुले मैदानों में रहने वाला, शिकार करने वाला, बलवान और साहसी व्यक्ति था।
- इसहाक एसाव की शारीरिक क्षमता की प्रशंसा करता था और उसे वह शिकार भी पसंद था जो एसाव घर लाता था।
- इस पक्षपात ने शुरू से ही परिवार में असंतुलन पैदा कर दिया।

"इसहाक एसाव से प्रेम करता था, क्योंकि वह उसके शिकार का मांस खाता था..." (उत्पत्ति 25:28)

एसाव का स्वभाव

साहसी, कठोर स्वभाव का, और शारीरिक इच्छाओं से प्रेरित।



- सांसारिक बातों में लगे रहना।
- आत्मिक विरासत को उसने अधिक महत्व नहीं दिया।
- शारीरिक अभिलाषाओं को दर्शाता था।

रिबका - माता

याकूब - चहेता पुत्र

रिबका याकूब से प्रेम करती थी

- याकूब रिबका का चहेता था; वह घर के पास ही रहता था और उसकी देख-रेख में रहता था।
- जन्म से पहले ही परमेश्वर ने घोषित कर दिया था कि याकूब अगुवाई करेगा।
- फिर भी, जो वादा परमेश्वर ने पहले ही कर दिया था, उसे पाने के लिए याकूब अक्सर चालाकी और हेर-फेर का सहारा लेता था।



"...पर रिबका याकूब से प्रीति रखती थी।"(उत्पत्ति 25:28)

याकूब का स्वभाव

- शांत, विचारशील और आध्यात्मिक रूप से जागरूक।
- परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को महत्व देता था।
- आत्मनिर्भरता और धोखे से संघर्ष करता रहा।
- कमियों के बावजूद, परमेश्वर उसे अपने मकसद के लिए ढाल रहे थे।

जन्मसिद्ध अधिकार की घटना

पाप नष्ट करने की खोज में

एसाव खेत से लौटा। वह बाहर था और **थक गया था तथा उसे भूख भी लगी थी।** उसी समय याकूब ने एक दाल तैयार की हुई थी; स्पष्ट है कि वह अच्छा रसोइया था।

"मुझे वही लाल दाल खाने को दे, क्योंकि मैं थका हुआ हूँ," एसाव ने माँगा। याकूब ने अपना मौका देख लिया। **वह एक छली और विश्वासघाती था, और वह बड़े भाई का हक़दार जेठे होने का अधिकार चाहता था।** याकूब ने कहा, "मैं यह दाल तुझे तेरे जेठे होने के अधिकार के बदले में दूँगा।"

जन्मसिद्ध के अधिकार का अर्थ यह था कि जिसके पास यह अधिकार होता, वही परिवार का **मुखिया और परिवार का याजक होता।** इस परिवार में, इसका मतलब था कि जिसके पास यह होगा **वह उस पंक्ति में शामिल होगा जो मसीह की ओर ले जाएगी।** एसाव ने इसे **कोई महत्व नहीं** दिया, और वह **परिवार का याजक नहीं बनना चाहता था। वह यह आभास भी नहीं देना चाहता था कि उसे ईश्वरीय चीज़ों में रुचि है।** "उसे उस पीढ़ीगत वंश में बने रहने में कोई दिलचस्पी नहीं थी जो प्रभु यीशु मसीह तक पहुँचता था।

याकूब यह देखता है और एक चाल चलता है, **"अगर तू मुझे अपना जन्मसिद्ध अधिकार दे दे, तो मैं तुम्हें एक कटोरा दाल दूँगा।"** एसाव इस सौदे से खुश हो गया।

याकूब जितना परमेश्वर को महत्व देता था, फिर भी उसने जो किया वह गलत था। परमेश्वर ने पहले ही वादा किया था, **"बड़ा छोटे की सेवा करेगा।" याकूब को उसका जन्मसिद्ध अधिकार परमेश्वर के सही समय पर मिलने वाला था।** लेकिन याकूब इंतज़ार नहीं कर सका, इसलिए उसने वह चीज़ खुद ही ले ली जिसका वादा परमेश्वर ने उससे किया था। उसे परमेश्वर के उसे देने का इंतज़ार करना चाहिए था। याकूब ने सोचा कि वह अपने लिए जो कर सकता है, करेगा। जब तक वह खुद अपनी मदद कर सकता था, **तब तक परमेश्वर का इंतज़ार क्यों करे? वह काफी चतुर था।** भविष्य में, **याकूब को परमेश्वर से एक कड़ा सबक सीखना था; जैसा तुम बोओगे, वैसा ही काटोगे!**

इसलिए **"एसाव ने अपने जन्मसिद्ध अधिकार को तुच्छ समझा"** और बैठकर अपनी दाल खाने लगा। **उसने अपना जन्मसिद्ध अधिकार छोड़ दिया क्योंकि उसके लिए उसका कोई महत्व नहीं था।**



> "याकूब को परमेश्वर के सही समय पर जन्मसिद्ध अधिकार मिलने वाला था। लेकिन याकूब इंतज़ार नहीं कर सका, इसलिए उसने वह चीज़ ले ली जिसका परमेश्वर ने उससे वादा किया था।"





परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 25 से हमारे लिए सीख

1

शरीर और आत्मा के बीच लगातार चलने वाला संघर्ष ज़िंदगी भर चलने वाला संघर्ष है। याकूब और एसाव के बीच ज़िंदगी भर चलने वाला संघर्ष, जो गर्भ में ही शुरू हो गया था, रोशनी और अंधेरे, अच्छाई और बुराई, और आत्मा और शरीर के बीच चलने वाली लड़ाई को दिखाता है। असलियत यह है कि परमेश्वर का हर बच्चा इस संघर्ष का अनुभव करेगा।
(गलातियों 5:16-17; रोमियों 7:22-23; रोमियों 8)

2

दुनियावी चीज़ों के मुकाबले, मसीह जैसा बनने की हमारी इच्छा परमेश्वर के लिए ज़्यादा मायने रखती है। एसाव शारीरिक स्वभाव का प्रतीक है; वह एक बलवान, बाहर रहने वाला व्यक्ति था, जिसमें परमेश्वर के लिए न तो कोई इच्छा थी और न ही कोई क्षमता। वह पूरी तरह से दुनियावी इंसान की तरह जीता था और उसने अपने "जन्मसिद्ध अधिकार" को तुच्छ समझा—जो परिवार में आत्मिक मुखिया होने और मसीह की वंशावली को आगे बढ़ाने का अधिकार था। दूसरी ओर, याकूब में कई कमियाँ थीं और वह चालाक भी था, लेकिन अंदर ही अंदर वह समझता था कि जीवन का मकसद कुछ और है और वह परमेश्वर को महत्व देता था। **परमेश्वर ने याकूब की कमियों के बावजूद उसके जीवन में काम किया और उसे बेहतर बनाया, क्योंकि याकूब परमेश्वर के लिए जीना चाहता था।**
(इब्रानियों 12:16–17; 1 यूहन्ना 2:15–17)

3

हमें इंसानी चालबाज़ी पर निर्भर रहने के बजाय परमेश्वर के सही समय पर भरोसा करना चाहिए। जुड़वाँ बच्चों के जन्म से पहले ही परमेश्वर ने वादा किया था कि बड़ा (एसाव) छोटे (याकूब) की सेवा करेगा। जन्मसिद्ध अधिकार याकूब के लिए ही था, लेकिन परमेश्वर के सही समय का इंतज़ार करने के बजाय, याकूब ने गलत तरीके से मामला अपने हाथ में ले लिया और उसे पाने के लिए चालाकी का सहारा लिया। **हमारे लिए सीख यह है कि हम खुद चालाकी से चीज़ों को बदलने की कोशिश करने के बजाय, परमेश्वर के वादों को पूरा करने का इंतज़ार करें।**
(रोमियों 9:10-12; याकूब 4:13-15)

मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1
मेरे जीवन में इस समय किन क्षेत्रों में मैं अपनी शारीरिक अभिलाषाओं और परमेश्वर के वचन के अनुसार चलने की इच्छा के बीच संघर्ष का अनुभव कर रहा हूँ?

सवाल 2
क्या मैं अपनी रोज़मर्रा की आदतों में शारीरिक कामों को प्राथमिकता देकर अपनी "शरीर की इच्छाओं" को बढ़ावा दे रहा हूँ, या मैं सक्रिय रूप से परमेश्वर के लिए अपनी क्षमता को बढ़ा रहा हूँ ताकि मैं उनकी बात मान सकूँ?

सवाल 3
क्या ऐसे कोई क्षेत्र हैं जहाँ मैं, एसाव की तरह, अपनी लंबे समय की आध्यात्मिक विरासत को तुरंत मिलने वाली सांसारिक खुशी (एक "कटोरा दाल") के लिए दांव पर लगा रहा हूँ?

सवाल 4
भले ही मुझमें भी याकूब की तरह कमियाँ और नाकामियाँ हों, क्या मैं परमेश्वर को दुनिया की "गंदगी" हटाने दे रहा हूँ, ताकि मुझमें परमेश्वर की चीज़ों के लिए एक सच्ची और गहरी चाहत पैदा हो सके?

सवाल 5
ऐसी कौन-सी परिस्थितियाँ हैं जिनमें मेरा मन "हेरफेर करने वाला" बनने या चालाकी भरी तरकीबें अपनाकर मनचाहा नतीजा पाने का करता है, क्योंकि मुझे लगता है कि मैं परमेश्वर के इंतज़ाम का इंतज़ार नहीं कर सकता?

सवाल 6
मैं अपनी सहायता स्वयं करने की इच्छा को कैसे बेहतर ढंग से परमेश्वर के अधीन कर सकता हूँ, ताकि भरोसा रख सकूँ कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को अपने सिद्ध समय पर मेरे जीवन में पूरा करेगा?

THRU the BIBLE

हमारे रिसोर्स का इस्तेमाल करें

THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करें और 200 से ज़्यादा भाषाओं में उपलब्ध ऑडियो बाइबल शिक्षाएँ सुनें।

Visit ttb.bible

हमारी वेबसाइट पर 'स्क्रिप्चर एंगेजमेंट' बुक सीरीज़ के और भी वॉल्यूम वाली इंटरैक्टिव डिजिटल फ्लिप बुक देखें।

Visit ttbsa.org